



भारत में थारू जनजाति की समकालीन स्थिति: सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं विकासात्मक परिप्रेक्ष्य

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23163171>

Santosh kumar¹, Dr. Mamta kumari²

***Corresponding Author:** ¹Research scholar in Sociology Sanskrit University
Asst. Professor in Sociology V.B.S. Govt. Degree College Caimpianganj Gorakhpur,
Uttar Pradesh – 273158, India

²Asst. Professor in Sociology Sanskriti University Mathura, Uttar Pradesh, India

सारांश

थारू जनजाति भारत के तराई क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण अनुसूचित जनजातीय समुदाय है, जिसकी प्रमुख आबादी उत्तर प्रदेश के भारत-नेपाल सीमा से लगे क्षेत्रों में निवास करती है। ऐतिहासिक रूप से थारू समुदाय का सामाजिक-आर्थिक जीवन कृषि, पशुपालन, मत्स्यपालन, वन-संसाधनों, स्थानीय पारिस्थितिकी, पारंपरिक ज्ञान तथा सामुदायिक संस्थाओं पर आधारित रहा है। समकालीन दौर में शिक्षा, सड़क एवं संचार सुविधाओं के विस्तार, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं, बाजार-व्यवस्था, प्रवासन, प्रौद्योगिकी तथा वैश्वीकरण के प्रभाव से थारू समाज में तीव्र सामाजिक परिवर्तन दिखाई दे रहा है। इसके बावजूद आजीविका की असुरक्षा, भूमि एवं वन-संसाधनों तक पहुँच, रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, डिजिटल असमानता, भाषा-परिवर्तन तथा सांस्कृतिक पहचान जैसी समस्याएँ अभी भी महत्वपूर्ण हैं।

यह शोध-पत्र वर्णनात्मक दृष्टिकोण से भारत में थारू जनजाति की समकालीन स्थिति का विश्लेषण करता है, जिसमें विशेष ध्यान उत्तर प्रदेश पर केंद्रित है। अध्ययन में जनगणना-2011, प्रकाशित शोध-अध्ययनों तथा उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। जनगणना-2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश में थारू जनसंख्या 1,05,291 थी, जिसमें 53,687 पुरुष तथा 51,604 महिलाएँ थीं। समकालीन थारू समाज को केवल परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह एक ऐसी सामाजिक परिवर्तनशील स्थिति को दर्शाता है जिसमें आधुनिक संस्थाओं में बढ़ती सहभागिता के साथ सांस्कृतिक निरंतरता भी विद्यमान है।

प्रमुख शब्द: थारू जनजाति, अनुसूचित जनजाति, जनजातीय समाज, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक समावेशन, सांस्कृतिक पहचान